मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 4, अंक 68, सितम्बर(प्रथम), 2019

कवि श्री राजेन्द्र वर्मा की चयनित कविताएँ और उनका अंग्रेज़ी में अनुवाद (Selected Poems of Rajendra Verma : Translation by Avadhesh K. Srivastava) : एक अद्वितीय कृति

रवीन्द्र कुमार 'राजेश'

हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के सुविख्यात रचनाकार **श्री राजेन्द्र वर्मा** ने काव्य-सृजन के क्षेत्र में बड़े मनोयोग एवं समर्पित भाव से पर्याप्त कार्य किया है। पद्य और गद्य, दोनों ही विधाओं में उनकी रचनाओं को पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। राजेन्द्र जी की अब तक दो दर्जन कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। गीत, ग़ज़ल, दोहा, पद, मुक्तक-रुबाई, हाइकु-ताँका आदि में उन्होंने बड़े सशक्त ढंग से अपने भाव व्यक्त किये हैं। पद्य की इन विधाओं में उनकी एक दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं जिन्हें हिंदी जगत ने खूब सराहा है। आकाशवाणी और दूरदर्शन से भी उनकी रचनाओं का प्रसारण होता रहा है। साहित्यिक मंचों पर भी उन्हें कभी-कभी देखा जा सकता है। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं।

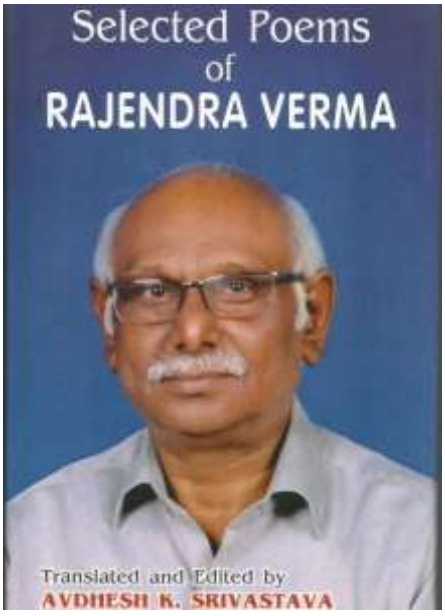

समीक्ष्य कृति (Selected Poems of Rajendra Verma) में 20 गीत, 09 गज़लें, मुक्तक-रुबाइयाँ, दोहे, ताँके-हाइकु और मुक्तछंद कविताएँ संकलित हैं जिनके अंग्रेज़ी में भावपूर्ण और काव्यात्मक अनुवाद प्रस्तुत किये गये हैं। अनुवादक **श्री अवधेश श्रीवास्तव** जी ने कवि की काव्य-रचनाओं में डूबकर अनुवाद प्रस्तुत किया है। पाठकों को कृति का वास्तविक आनंद तो उसके पूर्ण अवगाहन से ही होगा, किसी समीक्षा में तो सीमित स्थान में सीमित संतुष्टि से ही काम चलाना पड़ेगा।

गीत, 'जिजीविषा पगली' की ये पंक्तियाँ न केवल भावपूर्ण हैं, बल्कि उनका अनुवाद भी हृदय को छूता चलता है। मुखड़े और एक अंतरे का अनुवाद देखिए —

कब तक जियें ज़िन्दगी
जैसे दूब दबी कुचली।
जिसे देखिए, वही रौंदकर
हमको चला गया
अपशब्दों की चिनगारी से
मन को जला गया
छोटे-बड़े सभी ने मिल
छाती पर मूँग दली।

For how long shall we live
Like poor trampled grass ?
Every Dick Tom and Harry
Stamps us mercilessly and walks.
Spitting on us venom of words and
Burning us deep up to root,
People rejoice to hurt us
With their thumping boot.

इसी प्रकार, मानवीय संवेदनाओं के निरंतर क्षरण को सघनता से रेखांकित करने वाले एक गीत 'आँसुओं का कौन ग्राहक' का अनुवाद बहुत भावपूर्ण बन पड़ा है, गीत तो मार्मिक है ही—

आँसुओं का कौन है ग्राहक यहाँ,
फिर उन्हें हम क्यों उतारें हाट में?

हम प्रदर्शन हीनता का क्यों करें?
आप अपनी दृष्टि में हम क्यों गिरें?
हर कहीं आश्रय न मिलता पीर को
फिर उसे हम छोड़ दें क्यों बाट में?

For tears, when there is no buyer,
Why should we flaunt them in the market?

Why should we show our weaknesses?
Why should we be belittled in our eyes?
Pain is not welcome anywhere,
But if it has come to stay,
Why not learn to live with it.

मानव-जीवन के लक्ष्य को उकेरता एक गीत, 'जग का आलिंगन' की इन पंक्तियों की आज देश-दुनिया को बहुत ज़रूरत है। पूरा गीत बहुत ही पठनीय और मननीय है। एक अंतरे का अवलोकन करें—

मैं जग का आलिंगन करता।

मेरे जीवन का लक्ष्य एक,
हर कोई जग में बने नेक,
अंतर के अंतर भरने को
मैं सबमें साम्यबोध भरता।

I embrace the world.

There is only one aim in life
Virtuous everyone should be;
To fill the gap among the hearts
I generate the feeling of equality.

इसी प्रकार, गजलों का अनुवाद भी बहुत अच्छा बन पड़ा है। ग़ज़ल में त्वरा का बड़ा महत्त्व है, लेकिन अनुवादक ने इसकी रक्षा करने में सफलता प्राप्त की है--

अमीरी मेरे घर आकर मुझे आँखें दिखाती है,
ग़रीबी मुस्कुराकर मेरे बर्तन माँज जाती है।

भले ही सूर्य बन्दी हो गया अट्टालिकाओं में,

अँधेरो! किन्तु मेरे घर अभी भी दीप-बाती है।

xx xx

Affluence comes my home with frown and disdain,
But poverty comes smiling and even my utensils clean.

Sun might be trapped in sky scrapers like a tramp,
But O' Darkness, in my home I have a lamp.

राजेन्द्र वर्मा की कविता की चाहे जो विधा हो, वे उसमें युगबोध के चित्रण के साथ-साथ तत्त्व की स्थापना अवश्य करते हैं। यह कवि का दायित्व भी है। मानव-जीवन में आजकल स्वार्थपरता की कोई सीमा नहीं है, फिर भी कुछ लोग निःस्वार्थ भावना से अपना काम करते रहते हैं। कवि सूरज के हवाले से अपनी बात बहुत ही प्रभावी ढंग से रखता है और उसकी भावना की रक्षा करते हुए अनुवादक भी अपनी कला का प्रदर्शन करता है। एक रुबाई और मुक्तक का भावानुवाद देखिए—

उगते हुए सूरज को जल चढ़ाता है,
ढलते हुए सूरज से मुँह फिराता है,
संसार का व्यवहार भले कैसा हो,
सूरज अपना काम किये जाता है।

We all worship the rising Sun,
But turn our back as he sets,
Caring less what people do,
The Sun never his work forgets.

xx xx

दीप-शिखा पर प्राण शलभ, न्योछावर कर देता है
किन्तु प्रेमियों के उर में, नवजीवन भर देता है
मौन साधनारत रहना, यद्यपि अत्यन्त है दुष्कर,
किन्तु मौन साधक संसृति को, शाश्वत स्वर देता है।

On the flame of lamp the moth sacrifices its life,
But fills the heart of lovers with a new life,
Silent penance is difficult to continue for long,
But a silent devotee gives an eternal message of life.

अन्य विधाओं, यथा दोहा, हाइकु-ताँका, मुक्तछन्द कविता में भी सशक्त कविताएँ हैं और तदनुसार उनके सुन्दर और सटीक अनुवाद हैं। राजेन्द्र वर्मा का कृतित्त्व ही है कि उनके ऊपर लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा एम्-फिल करायी जा चुकी है और उ.प्र. हिंदी संस्थान के अलावा देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित किया जा चुका है। अतः उनकी चयनित कविताएँ पठनीय और संग्रहणीय हैं और इनकी उपादेयता तब और बढ़ जाती है जब उनका अंग्रेज़ी अनुवाद महज सूखा गद्य नहीं, पद्यात्मक अनुवाद हिंदी और अंग्रेजी साहित्य के प्रतिष्ठित रचनाकार श्री अवधेश श्रीवास्तव द्वारा किया गया हो। राजेन्द्र जी को संग्रह की बधाई के साथ-साथ अनुवादक श्री श्रीवास्तव जी को इस महत्त्वपूर्ण कार्य हेतु साधुवाद !

पुस्तक विवरण	
पुस्तक का नाम	Selected Poems of Rajendra Verma (Translation)
अनुवादक	श्री अवधेश कुमार श्रीवास्तव
प्रकाशक	अयन प्रकाशन, 1/20 महरौली, नई दिल्ली-30
संस्करण	प्रथम, 2019
पृष्ठ सं.	128
मूल्य	250/- (हार्ड बाउंड)

- ***पद्मा कुटीर, सी-27 सेक्टर-बी, अलीगंज, लखनऊ- 226 024***

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें